अनुक्रमणिका

क्र. स.	विषय-वस्तु	लेखक	पृष्ठ संख्या
1	स्व-वित्त पोषित एवं सामान्य माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत किशोरों की व्यावसायिक रुचियों का एक अध्ययन	डॉ. एन.पी.सिंह डॉ. निर्देश कुमार	05
2	PRESENT STATUS OF B.ED. COLLEGE	Dr. B.M. Dadheech	11
3	माध्यमिक स्तर पर यौन शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन	पंकज के. उपाध्याय	16
4	विभिन्न शैक्षिक समूहों की सामान्य बुद्धि व भावात्मक बुद्धि में सह-सम्बन्ध एवं तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. गिरिराज भोजक गरिमा धारीवाल	20
5	शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों की निर्णय क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन	प्रो. आर.पी. सनाढ्य डॉ. अमित कुमार दवे	26
6	व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु कोचिंग लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के समायोजन का विश्लेषण	डॉ. सरोज गर्ग मूलचन्द मीणा	32
7	उच्च परीक्षा दुश्चिन्ता वाले विद्यार्थी का व्यक्तिवृत्त अध्ययन	डॉ. अमी राठौड़	38
8	अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में छात्राध्यापकों की संस्कृत भाषा दक्षता का अध्ययन''	मुकेश कुमार सुखवाल	42
9	पं. जनार्दनराय नागर के शैक्षिक चिन्तन में शिक्षकों से सम्बंधित मनोवैज्ञानिक विशिष्टताएँ	डॉ. शशी चितौडा डॉ. अनीता कोठारी	46
10	मध्यम आर्थिक स्तर के उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम वाले विद्यार्थियों की अधिगम शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. प्रहलाद सोनी	51
11	ATTITUDE OF PRIMARY TEACHERS TOWARD GRADING SYSTEM	Veena Yadav	58
12	बी.एड. शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन	डॉ. प्रवीण कुमार जैन	61
13	TO STUDY THE ENVIORNMENTAL ETHICS OF PUPIL TEACHER	Dr. Sarla Verma	66
14	सरकारी ग्रामीण व शहरी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में बालक एवं बालिकाओं के नामांकन एवं ठहराव का तुलनात्मक अध्ययन	दीपेश भट्ट श्वेता चौबीसा	70
15	उदयपुर शहर के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में अध्ययनरत अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों के समायोजन स्तर का अध्ययन	रोहित कुमावत ममता कुमावत	75

विभिन्न शैक्षिक समूहों की सामान्य बुद्धि व भावात्मक बुद्धि में सहसम्बन्ध एवं तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. गिरिराज भोजक*
गरिमा धारीवाल**

प्रस्तुत शोध आलेख में शोधार्थियों ने "विभिन्न शैक्षिक समूहों की सामान्य बुद्धि व भावनात्मक बुद्धि में सहसम्बन्ध व तुलना पर प्रकाश डाला है। इस कार्य हेतु न्यादर्श के रूप में 80 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श चयन विधि द्वारा किया गया। प्रस्तुत कार्य सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करते हुए किया गया। दत्तों की प्राप्ति हेतु मानकीकृत उपकरण 'इमोशनल इन्टेलिजेन्स इन्वेन्टरोरी" व टीजी आई का प्रयोग किया गया। अध्ययन में शोधार्थियों ने पाया कि माध्यमिक एवं स्नातक स्तरीय विद्यार्थियों की सामान्य बुद्धि एवं आध्यमिक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता। साथ ही माध्यमिक एवं स्नातक स्तरीय विद्यार्थियों की सामान्य बुद्धि व भावात्मक बुद्धि में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया।

मनुष्य ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है जो कि सृष्टि के अन्य प्राणियों से भिन्न एवं सृजनशील है, मानव को अन्य प्राणियों से भिन्न एवं श्रेष्ठ उसे उसकी बुद्धि बनाती है। इस बुद्धि का प्रयोग करके ही मानव ने आदिकाल से जंगली मानव से आधुनिक युग के सभ्य पुरूष तक की यात्रा पूर्ण की हैं। मानव की यह यात्रा आग की खोज से कम्प्यूटर की खोज तक निरंतर चलती रही है और आगे भी विकास के पथ पर अग्रसर हो रही है।

बुद्धि वह योग्यता है जिसमें कठिनाई, जटिलता, अमूर्तता, उद्देश्य के प्रति अनुकूलता, सामाजिक मूल्य एवं मौलिकता की आवश्यकताओं की विशेषताएँ हों जो शक्ति के केन्द्रीयकरण की मांग की पूर्ति करती हो तथा भावात्मक शक्तियों के प्रति सहनशील हो। बुद्धि में कोई एक गुण नहीं होता, बल्कि अनेक गुणों का समुच्चय है। मानसिक आयु एवं वास्तविक आयु का अनुपात बुद्धि–लब्धि (IQ) कहलाता है। सामान्यतः यह समझा जाता है कि व्यक्ति की सफलता व उपलब्धियाँ, उसकी बुद्धि–लब्धि पर आधारित होती है। जिसकी बुद्धि–लब्धि अधिक होती है, उसकी जिन्दगी की उपलब्धियाँ भी अधिक होती है परन्तु आधुनिक शोधों से स्पष्ट हो गया है कि व्यक्ति को अपनी जिन्दगी में जो भी सफलता प्राप्त होती है, उसका मात्र 20 प्रतिशत ही बुद्धि–लब्धि के कारण होता है, और 80 प्रतिशत सांवेगिक या भावात्मक बुद्धि के कारण होता है।

आधुनिक शोधों से स्पष्ट हो गया है कि हमारी भावात्मक क्षमता निर्धारित करती है कि हम अपनी मानसिक योग्यताओं का उपयोग किस प्रकार से करे जिनकी संवेगात्मक लब्धि (EQ) ज्यादा होती है, ऐसे लोग संवेदनशील, आत्मविश्वासी, अच्छा सीखने वाले तथा आत्मसम्मान रखने वाले होते हैं। किशोरावस्था में

*सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूँ
** एम. एड. छात्रा, शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूँ

संवेगात्मक स्थितरता नहीं होने से उनमें जरा–जरा सी बात पर क्रोधित होकर हिंसात्मक हो जाना, विध्वसंकारी होना, निराश होकर आत्महत्या पर उतारू हो जाना, जैसे लक्षण उनके व्यवहार में परिलक्षित होते है। परिणामस्वरूप विद्यार्थियों का उपलब्धि स्तर निम्न होता जाता है और अन्ततः उन्हें असफलता व निराशा प्राप्त होती है।

समस्या का औचित्य

आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग ने व्यक्ति के सामने अनेक समस्याएँ उत्पन्न कर दी है। प्रतिस्पर्धा में रहने और सफलता प्राप्ति के लिए उच्च बुद्धिलब्धि के साथ–साथ भावात्मक बुद्धिलब्धि का भी होना आवश्यक है। कभी–कभी देखा जाता है कि क्यों कुछ लोग जिनकी कॉलेज की शैक्षिक उपलब्धियाँ काफी उच्च थी, बाद की जिंदगी में उन्हें असफलता हाथ लगी व क्यों कुछ लोग जिनकी शैक्षिक उपलब्धियाँ काफी निम्न रही, बाद की जिंदगी में उन्हें काफी सफलता मिल पाई। एक सफलतम व्यक्ति, जो अपने सफलता के चरम पर भी आत्महत्या जैसा अनावश्यक कदम उठा लेता है।

ऐसा होने का कारण उनका भावात्मक रूप से कमजोर होना है। इन बातों को ध्यान में रखकर हमारे सामने एक समस्या उत्पन्न हुई कि सामान्य बुद्धि व भावात्मक बुद्धि के बीच संबंध क्या है ? छात्र–छात्राओं के शैक्षिक स्तर और उनके परीक्षा परिणामों के उन्नयन हेतु आवश्यक है कि हम उनकी सामान्य बुद्धि (IQ) एवं भावात्मक बुद्धि (EQ) में संबंध के बारे में जाने व उनका विद्यालय/महाविद्यालय में साथियों, अध्यापकों व शैक्षिक वातावरण के साथ कैसा व्यवहार है ? को जाने व अध्ययन करें। इन सभी समस्याओं पर दृष्टि रखते हुए इस समस्या का चयन किया गया।

शोध उद्देश्य

1. विभिन्न शैक्षिक समूहों में सामान्य बुद्धि व भावात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक एवं स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की सामान्य बुद्धि एवं भावात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. माध्यमिक एवं स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की सामान्य बुद्धि व भावात्मक बुद्धि में सहसंबंध का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएँ

1. माध्यमिक स्तर के छात्रों व छात्राओं की सामान्य बुद्धि व भावात्मक बुद्धि में कोई सार्थक सहसंबंध नहीं पाया जाता है।
2. स्नातक स्तर के छात्रों व छात्राओं की सामान्य बुद्धि व भावात्मक बुद्धि में कोई सार्थक सहसंबंध नहीं पाया जाता है।